व्यवस्था सिद्धान्त ⇒ यह अंतर्राष्ट्रीय राजनीति के अध्ययन की वैज्ञानिक पद्धति है। व्यवस्था सिद्धान्त अन्तः शास्त्रीय पद्धति का उदाहरण है व्यवस्था सिद्धान्त उद्देश्य।

व्यवस्था सिद्धान्त का उद्देश्य अंतर्राष्ट्रीय राजनीति के संदर्भ में एक वृहद सिद्धान्त का निर्माण करना जिससे अंतर्राष्ट्रीय राजनीति के किसी भी पक्ष को समझने के लिए एक सम प्रत्यात्मक ढाँचा बनाया जा सके। व्यवस्था सिद्धान्त का सैद्धान्तिक आधार इसका सिद्धान्त आधार है वह सामान्य व्यवस्था सिद्धान्त है।

अंतर्राष्ट्रीय राजनीति के संदर्भ में व्यवस्था सिद्धान्त का उपयोग भाग-II सिद्धान्तों ने भाग दो से किया है।

(I) कुछ लोगों ने इसे वर्णनात्मक स्वरूप में प्रस्तुत किया है। Rosenau.

(II) कुछ लोगों ने व्यवस्था को व्याख्यात्मक रूप में प्रस्तुत मैकलेलन कैप्लन वाल्टज, Wantaz कैनेथ Boulending

(III) विश्लेषणात्मक ÷ विश्लेषणात्मक रूप में मार्टन कैप्लान प्रस्तुत किया है। आँकड़े एकत्र करने अंतर्राष्ट्रीय राजनीति के संदर्भ में आँकड़े एकत्रित करके व्यवस्थित करके उनके माध्यम से अंतर्राष्ट्रीय राजनीति की सामान्य प्रवृत्तियों को समझने में इसका उपयोग किया है।

Scanned with CamScanner

मार्टिन कैम्पलान द्वारा प्रस्तुत व्यवस्था सिद्धान्त अंतर्राष्ट्रीय राजनीति के अध्ययन पद्धति के रूप में सबसे महत्वपूर्ण है। कैम्पलान का मानना था की अंतर्राष्ट्रीय राजनीति में जो कुछ घटित हो रहा है उसका एक मॉडल बनाया जा सकता है। इस मॉडल के आधार पर अंतर्राष्ट्रीय राजनीति को समझा जा सकता है।

व्यवस्था की संकल्पना क्या है।

व्यवस्था विभिन्न तथ्यों के मध्य संरचनात्मक सम्बन्ध की ओर इंगित करती है। प्रत्येक व्यवस्था का अपना वातावरण तथा सीमा होती है व्यवस्था के अन्दर क्रिया और प्रतिक्रिया चलती रहती है।

अंतर्राष्ट्रीय व्यवस्था की विशिष्टताएं :-

① मार्टिन कैम्पलान के अनुसार अंतर्राष्ट्रीय व्यवस्था की इकाईयां पृथक रूप से राष्ट्र - राज्य में साथ ही इसमें आई राष्ट्रीय इकाईयां भी है जैसे NAM, UNO में सभी इकाईया एक दूसरे से क्रिया प्रतिक्रिया करती रहती है इन इकाइयों में संरचनात्मक सम्बन्ध है अंतर्राष्ट्रीय व्यवस्था के पाँच चर है।

(1) अनिवार्य नियम Essential Rule
(2) कर्ता :- (Actor)
(3) परिवर्तन के नियम
(4) सूचना Information
(5) क्षमता Capability

मार्टन कैप्लान के अनुसार अंतर्राष्ट्रीय राजनीति के परिवर्तनशील है व्यवस्था का स्वरूप परिवर्तन होता रहता है। परिवर्तन मैक्लान कैप्लान के अनुसार एक निश्चित क्रम के होता है।

मार्टन कैप्लान 1954 अंतर्राष्ट्रीय व्यवस्था से सम्बन्धित 6: मॉडल प्रस्तुत किया मार्टन कैप्लान के अनुसार यह मॉडल इसी क्रम में आते है। कुछ ऐतिहासिक मॉडल कुछ सम्भावित मॉडल है। 1957 में अंतर्राष्ट्रीय राजनीति में आये परिवर्तनों को देखकर चार मॉडल और दिया है।

मॉर्टन कैप्लान ने प्रत्येक मॉडल में प्रमुख कर्ता बताये है व्यवस्था में जिन कारणों से परिवर्तन हुआ इनके उल्लेख किया है।

6: मॉडल

1. शक्ति संतुलन मॉडल
2. शिथिल द्विध्रुवीय व्यवस्था
3. दृढ़ कठोर द्विध्रुवीय व्यवस्था
4. सार्वभौमिक व्यवस्था
5. श्रेणी बद्ध व्यवस्था
6. ~~बीटो~~ इकाई निषेधाधिकार ÷ चार अन्य मॉडल
7. अविशिथिल द्विध्रुवीय व्यवस्था

(8) तनाव शैथिल व्यवस्था

(9) आस्थिर शुक्रीय व्यवस्था

(10) अपूर्ण परमाणु प्रसार व्यवस्था :-

(1) संतुलन व्यवस्था :- ~~Power~~ Balance of Power :-

शक्ति संतुलन प्राचीनतम व्यवस्था है यह यूरोप में 17वीं 18वीं 19वीं तथा 20 वीं शताब्दी के प्रारंभ में व्याप्त थी। शक्ति संतुलन व्यवस्था शक्ति प्रबंधन की व्यवस्था जिसके द्वारा शांति की व्यवस्था की जाती है। शक्ति संतुलन के 8 नियम है

(1) इस व्यवस्था के कर्ता राष्ट्र-राज्य है किसी प्रकार की अंतर्राष्ट्रीय संगठन व्यवस्था नहीं है। प्रत्येक राष्ट्र अपने राष्ट्रीय हित की सुरक्षा के लिए प्रतिबद्ध है यहां तक की युद्ध भी कर सकते हैं।

(2) प्रत्येक राष्ट्र अपनी शक्ति को बढ़ाने का कार्य करता है इसके लिए राष्ट्र आपस में समझौते करते हैं।

(3) किसी इकाई या कर्ता को व्यवस्था से बाहर नहीं किया जाता है

(4) किसी को भी संतुलन बिगाड़ने का अधिकार नहीं दिया जाता जो भी संतुलन बिगाड़ने का कार्य करेगा। सभी उसके विरुद्ध कार्य करेंगे।

(5) पराजित कर्ता को पुनः व्यवस्था में लाया जायेगा।

(6) किसी को भी अंतर्राष्ट्रीय राष्ट्रीय सिद्धान्त परिभाषित करने नहीं

दिया जायेगा।

(2) शिथिल द्विध्रुवीय व्यवस्था ⇒ यह भी एक ऐतिहासिक व्यवस्था है द्वितीय विश्व युद्ध के बाद स्थापित हुई थी।

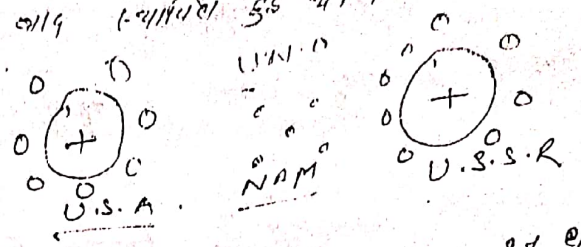

इसमें शक्ति के दो प्रमुख केन्द्र हैं। अन्य राष्ट्र इन ध्रुवों के चारों ओर हैं अंतर्राष्ट्रीय संगठन या कूटनीति जैसे, U.N.O. NAM इस लिए शिथिल व्यवस्था है।

(3) कठोर द्विध्रुवीय व्यवस्था ⇒ ऐतिहासिक व्यवस्था नहीं है। अन्य ~~राष्ट्र~~ अंतर्राष्ट्रीय संस्थाओं का प्रभुत्व नगण्य हो जायेगा। दो ध्रुव में शक्ति प्रमुख रूप से होगी। एक दूसरे के विरुद्ध सांठ-गांठ करते हैं।

(4) सार्वभौम व्यवस्था ⇒ विश्व सरकार की स्थापना U.N.O को विश्व सरकार मान लिया जाय विश्व एक देश मान लिया जाय। ध्रुवों का महत्व खत्म हो जाये। राष्ट्र और विश्व सरकार दो Actor होंगे।

(5) श्रेणी बद्ध व्यवस्था ⇒ इस व्यवस्था में एक राष्ट्र आधिपत्य शक्ति शाली हो जायेगा। अंतर्राष्ट्रीय व्यवस्था संचालित करेगा। सार्वभौमिक व्यवस्था नहीं बनती होगी।

ईकाई निषेधाधिकार व्यवस्था :- प्रत्येक राष्ट्र सामान्य रूप से शक्तिशाली है। यह हाब्स की प्रकृति की अवस्था के समान है। यह स्थिति अराजकता पूर्ण है।

(7) अतिशिथिल द्विध्रुवीय व्यवस्था :- दो ध्रुव इनके साथ सहायक राष्ट्र हैं अंतर्राष्ट्रीय संगठन हैं ध्रुवों के आपसी राष्ट्रों के मध्य युद्ध होगी। सदस्यों की संख्या ध्रुवों के प्रति कम होने लगती है। एक ही ध्रुव के सदस्यों के मध्य तनाव होने लगते हैं। प्रतिक्रियात्मक अवस्था है।

(8) तनाव शैथिल व्यवस्था :- ध्रुवों के मध्य शत्रुता की तीव्रता में कमी संधियां अंतर्राष्ट्रीय संधियां।

(9) आदर्श ध्रुवीय व्यवस्था :- इसमें शत्रुता की तीव्रता में वृद्धि होगी। ध्रुवों के बीच तनाव बढ़ जायेगा। अंतर्राष्ट्रीय राजनीति में अस्थिरता की कमी हो जायेगी।

(10) अपूर्ण परमाणु प्रसार व्यवस्था :- इसमें 15, 20, राष्ट्रों के पास नाभिकीय शक्ति हो सकती है इस शक्ति के चलते अंतर्राष्ट्रीय राजनीति में विश्व युद्ध को प्रभावित करने की क्षमताएं होंगी।

(11) शीतयुद्ध के पश्चात नयी विश्व व्यवस्था के संदर्भ में नये सम्प्रत्ययों का विकास किया गया है

पैंगिल सिल वेनिया विश्व विद्यालय के प्रो० रावर्ट एक्सलरोड ने निम्न सात सम्प्रत्यय दिये है।

(1) अ. आर्थिक व्यवस्था

(ब) बहुध्रुवीय व्यवस्था

(स) एकल ध्रुवीय व्यवस्था

(द) विश्व ग्राम मॉडल

(ई) सभ्यता के संघर्ष का मॉडल

(उ) शांति के क्षेत्र बनाम अशांति वाले क्षेत्र

(ऊ) द्विध्रुवीय व्यवस्था आ सकती है इसमें U.S.A. बनाम CHINA. U.S.A. Vs. Japan.

व्यवस्था सिद्धान्त की सामान्य आलोचना

(1) यह अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति का कोई सिद्धान्त नहीं केवल मात्र सम्प्रत्यात्मक ढांचा देता है। इसका नीति निर्माण से कुछ लेना देना नहीं है।

(2) इसमें घरेलू कारकों को नजर अंदाज किया गया है। इसमें मूल्यों का कोई महत्व नहीं है।

(3) इस के माध्यम से राष्ट्रीय हित को समझने में कोई मदद नहीं मिलती इसका व्यवहारिक उपयोग बहुत सीमित है।

(5) कैम्पबान की आलोचना

(6) अंतर्राष्ट्रीय राजनीति का अत्यन्त सरल चित्रण किया गया है अधिक कौतूहल, अत्यधिक तथ्यों को अनदेखा किया गया

(7) अनेक मॉडल वास्तविकता से मेल नहीं खाते।

(8) अंतर्राष्ट्रीय राजनीति का अति सामान्य विश्लेषण किया गया है।

(9) विश्व व्यवस्थाओं का अभाव है क्षेत्रीय उपव्यवस्थाओं का कोई अभाव नहीं है।

(10) राष्ट्रों के मध्य व्यवस्था को निर्धारित करने वाले तथ्यों पर कोई ध्यान नहीं दिया गया है।

(11) हेडले बुल के अनुसार इस सिद्धान्त की कोई प्रासंगिकता नहीं है यह मात्र ~~औपचारिक~~ बौद्धिक अभ्यास है।

उपयोगिता :- यह सिद्धान्त अंतर्राष्ट्रीय राजनीति के अध्ययन पद्धति में वैज्ञानिकता लाने की दृष्टिकोण से महत्वपूर्ण है अंतर्राष्ट्रीय राजनीति के विभिन्न आंकड़ों को व्यवस्थित करने और अच्छा विश्लेषण करने में इसका योगदान है।